ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।

ॐ सकलजनन्यै नमः ।।

सकलजननीस्तवः

श्री धर्माचार्यकृत

पंचस्तवी

का पांचवां स्तव

कश्मीरी रूपांतरकार - प्रो० ओंकारनाथ चंगू

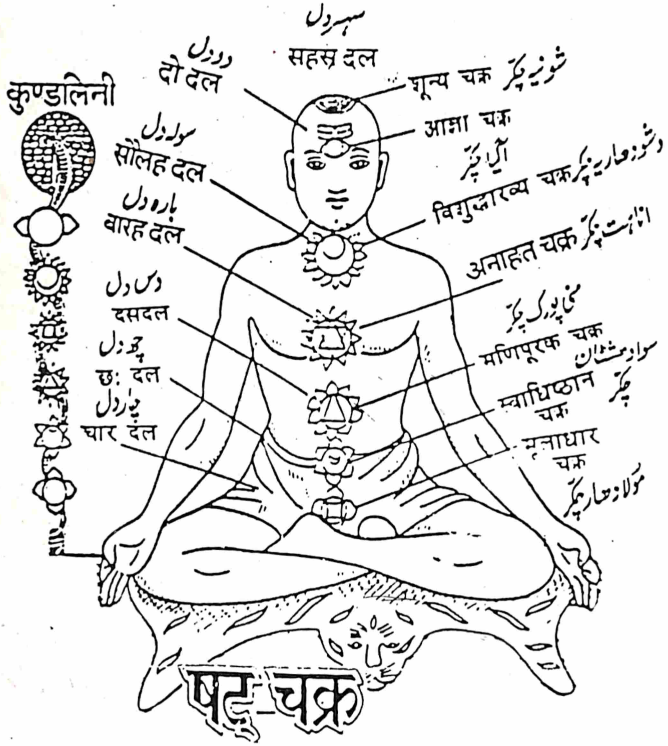

मिलने का पता :- **भगवान गोपीनाथ आश्रम,**

बोडी, उदयवाला जम्मू

पम्पोश एन्कलेव नई दिल्ली-48

जनवरी 2000

मूल्य रु० 5-00

ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।

ॐ सकलजनन्यै नमः ।।

सकलजननीस्तवः

श्री धर्माचार्यकृत

पंचस्तवी

का पांचवां स्तव

कश्मीरी रूपांतरकार - प्रो० ओंकारनाथ च्रंगू

R. L. BHAT
Personal Collection
24/8/04

मिलने का पता :- भगवान गोपीनाथ आश्रम,
☛ बोडी, उदयवाला जम्मू
☛ पम्पोश एन्कलेव नई दिल्ली-48

जनवरी 2000

मूल्य रु० 5/=

प्रस्तावना

संस्कृत काव्य में शिखरिणी नाम का छन्द बहुत लोकप्रिय बना है। शिवमहिम्नस्तोत्र में इसी छन्द का प्रयोग किया गया है । यह छन्द सामूहिक गायन में अति मधुर लगता है।

जगदम्बा के एक अनन्य-भक्त तथा शाक्त सिद्धयोगी श्री धर्माचार्य ने पराशक्ति की स्तुति करते हुए पांच स्तोत्रों का निर्माण किया उनमें से पञ्चम स्तोत्र का निर्माण करते हुए उन्होंने इस अतीव लोकप्रिय शिखरिणी छन्द का ही प्रयोग किया है, इसी कारण यह स्तोत्र अभी तक जनता में लोकप्रिय बना हुआ है।

इस स्तोत्र रत्न में शैव-शाक्त साधनाओं के कई एक रहस्यों का वर्णन सुमधुर काव्य-शैली में किया गया है। ऐसे रहस्यात्मक दर्शन सिद्धान्तों का जो निरूपण तर्क-शास्त्र की दुरूह युक्तियों के द्वारा किया जाता है, वह तो किसी विरले तार्किक विद्वान को ही समझ आता है, उसे समझाने के लिए जिन तर्क युक्तियों के अभ्यास की आवश्यकता होती है उनमें प्राय: भक्त-जनों को स्वाद नहीं आता है। वह युक्तियां स्वभाव से ही कठोर होती हैं, अत: भक्तों के कोमल हृदय में प्राय: स्थान नहीं पा सकती हैं। भक्तों के लिये तो भक्ति-रस से भरी सुमधुर और सरल काव्य-शैली ही अधिक उपयुक्त होती है। अत: महाकवि धर्माचार्य ने शाक्त-दर्शन के गूढ़तम सिद्धान्तों का निरूपण श्री पञ्चस्तवी में सुमधुर काव्य-शैली ही के द्वारा करके रखा है। तदनुसार इस सकलजननीस्तव में निम्नलिखित दुरूह दर्शन-सिद्धान्तों का निरूपन इस प्रकार से किया है।

पहले ही पद्य में कठोर और दुर्गम तर्क-युक्तियों की अपेक्षा भक्ति-भाव की प्रशंसा की गई है। चौथे और बारहवे पदों में इसी भाव का विशेष स्पष्टीकरण कर रखा है। नवम पद्य में अतीव महत्वमयी कुण्डलिनी साधना का काव्यात्मिक सुकोमल शैली में दिग्दर्शन कराया है। ग्यारहवां पद्य जगदम्बा के कामकला रूप को एक मिठास से भरी मनोहर शैली में कर रहा है, तेरहवें पद्य में किया गया इसी कामकला का वर्णन उससे भी अधिक सुमनोहर है।

अठारहवें पद्य में शाक्त सम्प्रदाय के रहस्य योग का निरूपण मनोहर काव्य-शैली में किया गया है। बीसवें पद्य में लययोग के रहस्य पर प्रकाश डाला गया है। बाईसवें और तेईसवें में इस सिद्धान्त पर बल दिया गया है कि वस्तुत: जगन्माता शक्ति ही शिव की शिवता है। वही तो शिव के पञ्चकृत्यों को चलाया करती है। पच्चीसवें पद्य में विरोधाभास अलङ्कार से अतीव सुन्दर बनी हुई काव्य-शैली में भगवती के स्वरूप का वर्णन कवि ने मनमोहक ढंग

से किया है। तीसवें पद्य में इस बात का संकेत किया गया है कि शिव जी के सभी पारमेश्वरी कृत्यों को वस्तुतः भगवती पराशक्ति ही निभाया करती है। तैंतीसवें पद्य में यह स्पष्ट किया गया है कि भिन्न भिन्न मतों के अनुयायी भक्त-जन अपने अपने इष्ट देवों के नाम से जो स्तुतियां करते रहते हैं वह सारी की सारी स्तुतियां पराशक्ति के ही महिमा के भिन्न-भिन्न रूपों को झलकाती हैं। पैंतीसवें पद्य में भी एक अन्य प्रकार की शब्द रचना के द्वारा इसी सिद्धान्त का निरूपण किया गया है। अन्तिम दो श्लोकों के द्वारा व्यञ्जना-शक्ति का आश्रय लेते हुए भगवती पराशक्ति के रहस्यात्मक कामकला बीज की स्तुति की गई है।

इस तरह से यह स्तोत्र-रत्न काव्यात्मिकता सुमधुर शैली में शाक्त-दर्शन के गूढ़ रहस्यों का वर्णन और स्तवन करता हुआ अतीव लोकप्रिय बना हुआ है। विशेषकर के कश्मीरी पण्डित समाज में।

इस स्तोत्र-रत्न को कश्मीरी पण्डित जनता तक विशेष कर विस्थापित होकर भारत वर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों पर बिखर के रह जाने से उन तक पञ्चस्तवी का कश्मीरी भाषा में पद्यरूप अनुवाद भली भान्ति पहुंचाने में प्रो० चंगू महोदय ने जो यह यत्न किया है अतीव प्रशंसनीय है। प्रो० ओंकार जी चंगू ने हर एक शलूक के सूक्ष्म अर्थ को अति मधुर शब्दों से संवारा है, अवश्य ही उन पर माता की कृपा रही है। जगन्माता उनका सर्वथा कल्याण करे. यह हमारी उनसे प्रार्थना है।

– डॉ० बलजीनाथ पण्डित

२ अक्टूबर १९९९

परिचय

पञ्चस्तवी शैव-शाक्त योग का एक अद्भुत स्तोत्र है। काश्मीर तथा दक्षिण भारत में इसका प्रचार प्राचीनकाल से चला आ रहा है । श्री धर्माचार्य के इस भक्ति और कुण्डलिनी योग सम्बन्धी स्तुति-श्लोकों के हिन्दी अंग्रेज़ी तथा कश्मीरी भाषाओं में कई अनुवाद छप चुके हैं परन्तु शाक्तमतानुसार इनके सूक्ष्म अर्थ (रहस्यार्थ) प्रकट करने के प्रयास बहुत कम हुए हैं। काश्मीर के वरिष्ट शास्त्री पण्डित हर भट्ट शास्त्री ने इस स्तोत्र-रत्न पर संस्कृत में एक विस्तृत टीका लिखी है।

पञ्चस्तवी के पांच स्तव परापरा शक्ति के क्रिया, ज्ञान, इच्छा, आनन्द और चित्त शक्ति को प्रधानता से वर्णन करते हैं।

प्रो० ओंकारनाथ च्रंगू ने इन संस्कृत भाषा में रचे मूल श्लोकों के सूक्ष्म अर्थ को सरल कश्मीरी पद्य में रूपान्तरित करने का यह सफल प्रयास किया है। मैंने इस रूपान्तरण को ध्यान से सुना और पढ़ा, और इनके परिश्रम का अनुमोदन करता हूँ। प्रो० च्रंगू ने इन अर्थों को बड़ी सावधानी से संवारा है। इस कार्य में उनको मेरी सहायता सुलभ रही है। काश्मीरी पण्डित जनता तथा कश्मीरी भाषा प्रेमियों को इन श्लोकों के गाने और सुनने से अवश्य सन्तोष मिलेगा तथा जनता को भी यथार्थ लाभ होगा।

परा भगवती त्रिपुरसुन्दरी के इस काव्य-रत्न में इस प्रकार से स्तुति की गई है कि इन अर्थों को बुद्धिबल से समझने की आवश्यकता है, नहीं तो देखने में सरल पर छल-पूर्वक की गई यह स्तुति समझ में नहीं आ सकती है, कई श्लोकों में स्त्री-शरीर के भौतिक सौन्दर्य का वर्णन मिलता है, साधारण अर्थ में तो वह केवल विषयापेक्षी ही जान पड़ता है, परन्तु इन श्लोकों के रहस्य-अर्थ को समझना आवश्यक है और अनिवार्य भी। अतः यह जानना आवश्यक होगा कि जगत माता के साकार विग्रह का प्रत्येक अंग परा-भगवती की विविध शक्तियों के ही प्रतिनिधि हैं, तभी परमार्थ-लाभ मिल सकता है। बुद्धिमान साधक को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

- जानकीनाथ कौल 'कमल'

अक्तूबर १९९७

दो शब्द

श्री पञ्चस्तवी के इस पांचवें स्तव 'सकलजननी स्तव' जिसमें पराशक्ती जगतअम्बा के सर्वव्यापक मातृ रूप चित्त शक्ति का वर्णन किया गया है। इसका कश्मीरी पद्यानुवाद आपके सामने प्रस्तुत है। इस प्रयास में सामान्य तथा सूक्ष्म भावों को पूरी तरह से संवारने में मैं कहां तक सफल रहा हूँ यह पञ्चस्तवी के प्रेमी ही बता सकते हैं।

मेरे इस परिश्रम में मेरा मार्गदर्शन मेरे विद्या-गुरु श्री जानकीनाथ जी कौल 'कमल' जिनके चरण कमलों में बैठ कर कई वर्ष तक मैंने इस ग्रन्थ का अध्ययन किया है और उन्हीं के निर्देशन में यह कश्मीरी अनुवाद सम्पन्न किया है, उनके चरण कमलों में मेरा शत-शत प्रणाम सदा बना रहे और उनका आशीर्वाद मुझे सदा उपलब्ध रहे।

संस्कृत भाषा के वरिष्ट आचार्य शैव-शास्त्री आदरणीय डॉ० बलजीनाथ पण्डित ने इस अनुवाद के सूक्ष्म भावों को सार्थक भाषा में प्रस्तुत करने में तथा अनुवाद में यथार्थता और स्पष्टता को लाने में जो मेरा मार्गदर्शन किया मैं उनका सदा आभारी रहूँगा और ऐसे आचार्य का आशीर्वाद मेरे ऊपर बना रहे यह मेरी कामना है।

इस पुस्तिका को आप भक्त जनों के सामने पहुँचाने में और मुद्रित करने में अपने प्रिय मित्र प्रो० ओंकारनाथ जी भान जो आजकल कनेडा में रहते हैं, तथा हैदराबार निवासी श्री चमनलाल दुरानी, परम पंचस्तवी भक्तों ने मेरी हर प्रकार से सहायता की। इस धर्म कार्य में मैं सदा उनका आभारी रहूँगा।

पञ्चस्वी का यह मेरा कश्मीरी पद्यानुवाद जगद्‌गुरु भगवान गोपीनाथ जी के अपार अनुग्रह से ही सम्भव हो सका है और इसे उन्हीं के प्रति अर्पण किया जा रहा है।

भगवान गोपीनाथ जी आश्रम के मित्रों ने विशेषकर सर्वश्री शिबनजी तुर्की, राजेन्द्र कम्पासी, सोहनलाल, तेजकृष्ण रैणा का इस सकलजननीस्तव को विजय मल्ला के संगीत निर्देशन में अशोक जी रैणा की मधुर आवाज़ में कैसेट भरवा कर आप भक्तजनों के सामने जो पेश किया इन सब भगवान गोपीनाथ जी के भक्तों का सदा आभारी रहूँगा।

- ओंकारनाथ च्रंगू

दिसम्बर १९९९

ॐ सकलजननीस्तवः पञ्चमः ।।

ॐ श्री सकलजनन्यै नमः ।।

ध्यान

चॖऽक्रीश्वरस पावि पावि शारिकायि खस
र्'वनि पादन नमान लोलॖ मीठ्य करान
अष्टादशभुज़ी छे' शिवॖ सुऽज़ शक्ती
चित्त-स्वरूपॖ त्रन ज़गतन सगॖवान
आऽदियन - व्याऽदियन, आपदायि संकटन
अकि दयायि दृष्टी स्वॖ शो'मुरावान
यि पञ्चस्तवी हुन्द सकलजननीस्तव
पर, कर चित्त स्वरूपॖ माजि हुन्द ध्यान
अऽस्य तवय गुल्य गऽन्डिथ छिय प्यवान चॆ'य परन
गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर
माता, गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर

ॐ श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।
ॐ श्री सकलजनन्यै नमः ।।

अजानन्तो यान्ति क्षयमवशमन्योन्य कलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः ।
जगन्मातर्जन्मज्वर भयतमः कौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ।।१।।

चाऽनिस अनन्त रूपस यिम नुॅ ज़ानान
तिम लगान छि वाद व्यवादुॅक्यन द्वलाबन
ब्यो'न ब्यो'न मतादिवाऽद्य छि जऽगडन लगान
माया खुर्यन फसान तुॅ नाशस गछ़ान
अऽस्य सेद्य तुॅ बोद्य साधक ज़गतमाता
अभिमानुॅ रो'स पादन चे़य नमान
ज्यतुॅ मरूॅ तुॅ रूगुॅ भयि अन्धकारन छख
च़न्द्रमुॅ प्रकाशुॅ रूपुॅ माऽज दूर करान ।।

वचस्तर्कागम्यस्वरसपरमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युतिदलित नीलोत्पलरुचे ।
शिवस्याराध्याय स्तनभरविनम्राय सततं
नमो यस्मै कस्मैचन भवनु मुग्धाय महसे ।।२।।

शाामुॅ रंगुॅ पम्पोश अलौकिक स्वरूप चोन
यथ नुॅ वाऽनी व्यच़ार ह्यकान छि बाऽविथ
क्रया शक्ति ज्ञान शक्ति वछ़स प्यठ

छख नऽमिथ जगतन आप्या दिवान
चैतन्य शिव ति चे़'य आराधना करान
चुँ यी छख तुँ ती छख छुय नमस्कार।।

लुठद्गुञ्जाहारस्तनभरनमन्मध्यलतिका-
मुदञ्चद्धर्माम्भः कणगुणितनीलोत्पलरुचम्।
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकारगुणितं
शिवामन्वग्यान्तीं शवरमहमन्वेमि शवरीम्।।३।।

शाामुँ रंगुँ शंकरस सफेद गुमुँ फे'र्य ज़न
नील कमस जोतान छु शबनम
दोरून शिकाऽर्य रूप तस अर्जुनस द्युतुन
वरदानस पाशुपत अस्तुँर
चे' ति दोरुथ शिकाऽर्यबायरूप पार्वती
नाऽलि सुँथुनन ताम रचुँफऽल्य माल
वछिके बारूँ छख नऽमिथ शिव शक्ती
अ'थ्य शवरी स्वरूपस छुय प्रणाम।।

मिथः केशाकेशिप्रधन निधनास्तर्क घटना
बहुश्रद्धाभक्ति प्रणयविषयाश्चाप्तविधयः।
प्रसीद प्रत्यक्षीभव गिरिसुते! देहि शरणं
निरालम्बं चेतः परिलुठति पारिप्लवमिदम्।।४।।

मेथ्यावाऽदि' तुँ ब्यो'न ब्यो'न मतादिवाऽल्य
अख अऽकसि टो'प कडान तुँ नाशस गछान
के'न्ह ज्ञाऽनी प्नुँनि येछि पछि माता
अत्यन्त वेश्वासुँ सो'स चे़'य पूज़ान
अऽस्य आश्रयहीन कष्टव छि वऽलिमुत्य
रठ च़रनन तल तुँ हाव दर्शुन।।

शुनां वा वह्नेर्वा खगपरिषदो वा यदशनं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाह्नाय वपुषि
प्रपद्येथाश्चेतः सकलजननीमेव शरणम्।।५।।

ही मनॅु यि नाशवान शरीर छुय नॅु रोज़वुन
अथ हून्य जानवर अग्न छिय ख्यवान
कमि हीतॅु कमि विज़ि कथ जायि त्रावुन
कऽम्य को'र व्यच़ार कान्ह नॅु अथ छु ज़ानान
च़ठ अमिच ममता अभिमान तॅु आशा
गछ़ ज़गतमातायि तनॅु मनॅु शरन।।

अनाद्यन्ताभेदप्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासीर्यत्वं परिणयविधौ देवि! ग्रहिणी।
सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैलतनय।
तदेतत्संसार प्रणयनमहानाटक सुखम्।।६।।

आदि अन्तॅु रो'सतुय चॅु शिव सुन्ज़ शक्ती
अभेद रूपॅु आऽसिथ ति दाऽरिथ चे रूफ
सारिनॅुय ज़ीवन व्वथपऽती छख दिवान
तवय दोरूथ हिमाल-पुत्री स्वरूप
व्यदिवथ विवाह शंकरस सूॅत्य सपॅुदुन
यि माया व्यलासॅु रूप छि चाऽन्य लीला।।

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः! प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः।
परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि! सुधिय-
स्तदेतत्त्वन्माया विलसितमशेषं ननु शिवे!।।७।।

ही स्वतन्त्र रूपा चाऽनिस स्वरूपस
के'न्ह मानान सथ केन्ह असथ वनान
के'न्ह ज्ञाऽनी द्वनुॅव्य सथ असत वनान
यूगी प्वरूॅष यिमव त्रेयव अपोर वनान
कऽमि रूपुॅ क्याह छख, छख चुॅय ज़ानान
यि माया छि चाऽनी व्यलासुॅ क्रीड़ा ।।

तडित्कोटिज्योतिर्द्युतिदलितषड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिवपुषा
किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूतमनिशं
भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बरकचम् ।।८।।

करोरूॅ बजुॅ वुज़मलुॅ तीजुॅ शन गण्डन च़टान
वसुॅवुन अमरयतुॅ वरशुन करान
छख बे'हान बे'यि मूलादारस प्यठ
अऱ्त्रुॅहव कलायव चुॅ शामुॅ रंगुॅ बनान
वछिबारूॅ नो'मरिथ बबरि केश रूपा
अऽथ्य स्वरूपस छुस माऽज नमन करान ।।

चतुष्पत्रान्तः षड्दल भगपुटान्तस्त्रिवलय-
स्फुरद्विद्युद्वह्निद्युमणिनियुताभद्युतियुते ।
षडश्रंभित्वादौ दशदलमथ द्वादशदलं
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति! नमस्ते गिरिसुते! ।।९।।

च़ वऽथुॅरूॅ पम्पोश मूलादार चे' आसन
त्रे'वरूॅ आऽर करिथ भगपुटस मंज़ चुॅ शान्त
ये'लि व्वदुॅयस यिवान स्वाधिष्ठानुॅ प्यठुॅ
सासुॅ बऽद्य सिर्ययि अगनुॅ वुजॅमल बनान

चटान दशदल द्वादश तुँ षोडशदल
पतुँ आज्ञा चऽक्रस प्यठ बे'हान
अदुँ भ्रूमध्य प्यठुँ ब्रह्मरऽन्ध्रस कुन
अमरय्तुँ रूपुँ पार्वती चे' छुय प्रनाम।।

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमपरे।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमपि प्राहुरपरे
महामाये! तत्त्वं तव कथममी निश्चिनुमहे।।१०।।

ही महामाया चे' के'न्ह कुल के'न्ह अकुल
के'न्ह कुलाकुल तुँ के'न्ह कौल रूप वनान
यिमव चोर्व पे'ठ्य छि के'न्ह गाटुँल्य वनान
छख अकथनीय अनाख्य-अपार नावुँ चुयँ
ही जगतमाता चुँय करनाव ज़ान
ज़ानोथ कमि रूपुँ कमि स्वरूपुँ किन्य।।

षडध्वारण्यानीं प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा
रुचा भस्मीकृत्य स्वपदकमलप्रह्वशिरसाम्।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः
कुचाभ्यामानम्रः शिवपुरुषकारो विजयते।।११।।

प्रलुँयिकि करोर बऽदि सिर्य नारुँ तावुँ ज़न
शन मार्ग जंगलन यिम बस्म करान
तिमय भऽखुँत्य चर्नन न्यथ कलुँ नो'मरिथ
कुसताम फो'लमुत स्वरूप चोन वुँछान
ज्ञान-क्रया यूग-ध्यानुँ शिव अहं यि रूप चोन
अऽथ्य सामर्थ्य रूपस छु जयकार।।

प्रकाशानन्दाभ्याम विदितचरीं मध्यपदवीं
प्रविश्यैतद्द्वन्दं रविशशिसमाख्यं कवलयन्।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहनभस्मी कृतकुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमम्ब! प्रविशति।।१२।।

ही पराशक्ति कुण्डलिनी माता
चुॅ नय ज़ाऽन्य मन्ज़ छख ग्वडुॅ के'न्ह यिवान
प्रान अपान सिर्य चन्द्रमुॅ ये'लि कचि़ रटान
सुशमनायि मंऽज्य नादस कुन गछ़ान
द्वयतुॅ भाव ज़ाऽलिथ चित्त अग्नि सूॅत्य
अदुॅ अचा़न उर्ध्व कुण्डिलिनी दामस़
चानि अनुग्रह अदुॅ अकूल भाव ज़ानान
शक्तिपाद, शिवरूपस गछ़ान लय।।

प्रियङ्गुश्यामाङ्गीमरुणतरवासः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफलबहुलनेपथ्यकुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फारस्तवकनमितां कल्पलतिकां
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिवचिन्तामणिपदम्।।१३।।

आनन्द प्रयङ्गलता हिह्य शाम रंगुॅ अङ्ग
व्वजुॅल्य जामुॅ लंजि लंजि म्वुॅखतुॅ फो'लमुत
ज्ञानुॅ-क्रया फलुॅ फो'लमुत वछ नम्योमुत
कल्पुॅ वृक्ष रूप जन चे' नो'न दोरमुत
अमिय स्वरूपुक ध्यान यिम भखुॅत्य छिय करान
शिव रूपुॅ चिन्तामणि पद लबान।।

षडाधारावर्तैरपरिमितमन्त्रोर्मिपटलैः-
चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद्दैवतझषैः

क्रमस्रोतोभिस्त्वं वहसि परनादामृतनदीं
भवनि! प्रत्यग्रा शिवचिदमृताब्धिप्रणयिणी ।।१४।।

ही पार्वती छख चुॅ अमर्यतुॅ धारा
अनाहतुॅ नादुॅ सो'स प्रवाह करुॅवुॅन्य
प्रवाह क्रमस मंज़ शे'यि प्रकऽर्य अति आवलुॅन्य
मंत्र मुद्रा मलख वे'षय मगरमछ़
अऽथ्य व्वसि द्रुॅव्सि मऽन्ज़ि अभ्यासुॅ क्रमुॅ किन्य
चुॅ दोरान शिव-प्रेम सागरस कुन ।।

महीपाथोवह्निश्वसनवियदात्मेन्दुरविभि-
र्वपुर्भिर्ग्रस्तांशैरपि तव कियानम्ब! . महिमा ।
अमुन्यालोक्यन्ते भगवति! न कुत्राप्यणुतरा-
मवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योमवपुषि ।।१५।।

पृथवी ज़ल अऽग्न वायू तुॅ आकाश
आत्मा च़ंऽदुॅरॅ सिरिय् अष्टमुर्ती
यिमव अऽठव स्वरूपव च़ें व्यस्तोरूथ
यि व्यवहार ज़गतुक माया स्वरूप
यि चोन अगाध प्रकाश रूप छुय युथ माता
ये'ति यिम साऽरिय छि चे'य लय गछ़ान ।

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौमग्नं त्रिगुणलहरीकोटिलुठितम् ।
कठाक्षश्चेदत्र क्वचनतव मातः! करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम् ।।१६।।

पो'श् जानवर मनुष्य गन्धर्व दीवुॅगण
द्रखुॅ सागरन मंज़ यिथ्य फऽट्यमुत्य

सतूगण रजोगण तमूगण लहरन -
मंज़ आमु'त्य तिम अलनुॅ वलुॅनय
यो'द अति कांऽसि चा'ऽन्य दया द्रष्टी बनि
प्रावि परमानन्द भाव गछि. लय।।

कला प्रज्ञामाद्यां समयमनुभूतिं समरसां
गुरुं पारम्पर्यं निनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतिं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः।।१७।।

ही सकलजननी मननशील व्यदवान
छिय वनान कला रूप क्रया शक्ति
थऽज़-विद्या, परम-सिद्धान्त, शिवशक्ति-म्युल
ग्वरुॅ रूप परमपरा विनय तुॅ व्वपदीश
चुॅय शिव कथा प्रमान निर्वान ऐश्वर्य
परम रहस्य विधि-विद्या रुपुॅ चे' सुमरान।।

प्रलीने शब्दौघे तदनु विरते बिन्दुविभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभिरनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलित-चिन्मात्रगहनां
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम्।।१८।।

युस यूगी दहि प्रकाऽर्य शब्दन लय
अख अऽकिस कऽरिथ बिन्द विभवस अचान
अदुॅ हृदयस मंज़ अष्ट-ध्वनि शो'मुॅरिथ
समनायि प्यठुॅ अनमनायि कुन गछ़ान
अमि क्रमुॅ साधनायि तिम यूगी छिय
अनाहत चिदानन्द रूपस लबान।।

परनन्दाकारां निरवधि शिवैश्वर्यवपुषं
निराकार ज्ञान प्रकृतिमनवच्छिन्न करुणाम् ।
सवित्रीं भूतानां निरतिशयधामास्पदपदां
भंवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम् ।।१९।।

परानन्द रूप शिवेश्वर्य रूप ति चोनुय
निराकार ज्ञान रूप तुॅ करुनामयी
ज़डचेतन पदार्थन इच्छा शक्ति
परम शिवधामुॅच आश्रय स्वरूप
यिम भखऽति अमीय ध्यानुॅ चाऽन्य स्मरना करान
तिमन यि संसार या मूक्ष हिशिय कथा।।

जगत्काये कृत्वा तमपि हृदये तच्च पुरुषे
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्यगहने
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्दविभवे
महाव्योमाकारे! त्वदनुभवशीलो विजयते।।२०।।

ही चिदाकाश रूप-पराशक्ती माऽज
लयि् चिन्तन-क्रियायि युस करि ध्यान
लय करि ज़गतस दिहस, दिहस ति हृदयस
पतुॅ परुशस बिन्दस तुॅ परनादस
अदुॅ ज्ञानरूपुॅ गछ़ि लय चिदानन्दस
तऽस्य क्रयावानस छु जय जयकार।।

विधे विद्ये वेद्ये विविधसमये वेदजननि!
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेदगुलिके।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम्।।२१।।

ही ब्रमांड-चेतना ही परा-विद्या
ज़ानॅंनस ग्रुग्य तुॅ ही वे'चार रूपा
ही वीदमाता अनन्त रूप दारुॅवुॅन्य
ज़गत - आद्य, शरनागतन - टोठुॅवऽन्य
ही वीदसार-शिवयछा अटल-श'खती
शिव विलास सो'खसागर तुॅ ममता
ही माता यिमव स्वरूपव चे़ वखनान
बुॅ क्याह वऽनय मे' दितुॅ बस अटल बुॅखुॅती।।

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदऽगमयदंसाभरणताम्।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब गिरिशः
शिवस्थायाः शक्तेस्तदिदमखिलं ते विलसितम्।।२२।।

क्रूध को'र शिवन चो'टुन ब्रहमाहस पूॅन्चिम कलुॅ
भिक्षा पात्रुॅ क'नि रऽटुन स्व कलुॅ खापुॅर
महाकाल तुॅ यमराज़ वऽलिन प्यठ त्रशूॅलस
आबूशनुॅ कॅनि रऽटिन फे'किस प्यठ
अनुग्रह को'रुन रो'टुन सु विश बन्यव नीलुॅकंठ
यि शखती शिवस चानि आसनुक प्रसाद।।

विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी
त्वमेवैकाऽनेका भवसि कृतिभेदैर्गिरिसुते।।२३।।

ब्रह्मा विष्ण-रुद्रु-शक्ति चुॅ दाऽरिथ
सृष्टी करान पालान तुॅ लय करान

ईश्वर शक्ति चे' खटॅवुन पिदान रूप
सदा शिव शक्ति त्रिमलॅ बन्धन चटान
ही पार्वती अभेद रुपॅ यो'द चॅ आसॅवुन्य
पंच-कृति लीलायि भेदमय बनान।।

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मना-
गऽशक्ये संस्प्रष्टुं चकितचकितैरम्ब! सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृतिकठिनाः कोमलतरे
कथं ते विन्दन्ते पदकिसलये पार्वति! पदम्।।२४।।

तिम मुनी यिमव काम क्रूध राग ज़्यूनॅमुत
मन ठहरोवमुत ध्यानॅ ज्ञानॅ सूॅत्य
तिम ति नटि मंज़ छि रोजॅवॅन्य जगतमाता
चानि पादॅ गर्दि हुन्द बजर बावनस
वीदसार छि अपनिषद कठिञ ज़ाननस कित्य
छिनॅ-माता चर्णन-निश ति जाय केन्ह लबान।

तडिद्वल्लीं नित्याममृतसरितं पाररहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमगुणग्रन्थिगहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामऽविनतकुचां विश्वजननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम्।।२५।।

साध सन्त चाऽन्य स्वरूप यिथ्य यिथ्य मानान
छख प्रज़लवॅन्य सदा वुज़मलॅ तीज़
बठ्यव रो'स अमृतॅ दरियाव कलङ्कॅ रो'स
जूनॅ गाश त्रे'मलॅ रो'स तॅ वाऽणी अपोर
ज्ञान क्रया वद्दि थऽज़ छख ज़गतमाता
न सोरवॅन्य भोग-मोक्ष लक्ष्मी स्वरूप।।

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृतिरचितं केवलमिदं
सुखं दुःखं चायं कलयति पुमांश्चेतन इति।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराहंकारं तव समयबाह्यो गिरिसुते! ।।२६।।

यि दिह छु पांचन तत्त्वन हुन्द अख व्वजुम प्यंड
अऽथ्य मानान पनुन आऽथ्य दपान छु म्योन
शरीरुक्य दुख स्वख ति अऽथ्य पुशरावान
ज़ानान नुँ ज़ड शरीर छु य'त्य त्रावुन
अज्ञान तुँ मूर्खतायि . किन्य माता
यि दिह अभिमान अहंकार नऽ त्रावान
ही पार्वती चानि अनुग्रह रो'स .मा
यि दिह् अभिमान तुँ मूह नाशस गछ़ान।।

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सद्म गृहिणीं
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने! मातर्भव करुणया सन्निधिकरी ।।२७।।

अन्त समयस प्यठ, मोल माऽज, बाऽय बन्ध
नोकर मे'थर पो'थुर घॅरुवाऽल्य नुँ साऽर्य
पनुन बाऽच़ तुँ धनुँ-द्यार साऽरी त्रावुँनम
दया कऽरिज़्यम मे' यिम ज़ाल चऽढिज़्यम
ही प्रकाश रुपुँ माऽज सनिदान रूज़िज़्यम
भय चऽटिथ, करिज़्यम-लय पानस सूॅत्य
ही ज़गतमाता यि अनुग्रह चुँ कऽरिज़्यम
मे' छम ना सदा रुज़मुँच़ चाऽन्य कल ।।

सुता दक्षस्यादौ किल सकलमातस्त्वमुदभूः
सदोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
अनाद्यन्ता शम्भोरपृथगपि शक्तिर्भगवती
विवाहाज्जायासीत्यहह चरितं वेत्ति तवकः।।२८।।

ही सकल माता छख अनन्तुँ रूपा
अकि ज़ायख दशप्रज़ापस चुँ कूर
शिव नुँ प्रज़नोव तऽम्य लो'गुस दूश चे'त्रोवथन
ज़्यथ हिमालुँ-पुत्री चे वो'रथन सु शिव
परिपूर्ण अभिन्न प्रकाश-विमर्श रूपुँ चुँय
अऽथ चानि लीलायि कऽम्य लो'बुँ अन्द।।

कणास्त्वद्दीप्तीनां रविशशिकृशानु प्रभृतयः
परं ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्दकणिका।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सुर्वमुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति।।२९।।

सिरिय चऽन्द्रम अग्नी तुँ तीजुँ वाऽल्य यिम
तिमन प्रकाश छु चानि तीजुक अख म्वय
शिव प्यठुँ पृथवी ताम त्रेवल चे' रो'टमुत
परमब्रह्म ति चानि आनन्दकुय कण
आश्चर्य माता यूत बो'ड चे' विश्व रूप
ति आऽसिथ फो'लान भऽखुँत्यन मनस मंज़।।

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छत्यम्ब! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम्।।३०।।

परा परा ज्ञानुँ शक्ति सु ज़ानान शिव
अपरा परा क्रिया यछ़ा शक्ती
सृष्टी करान पालान तुॅ लय करान ति सुय
यि चुॅय तस शिवस तुॅ अष्टमूर्ति ति चुॅय
पराकाशरूप प्राऽविथ सु शिव चे'य सूत्य
छु आश्चर्य तऽस्य सूत्य चुॅ नऽव्य संज़ करान।।

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमगुहम्।
दवीयो नेदीयः सदसदिति विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीम्।।३१।।

ब्रोंठ पतुॅ अऽन्दरुॅ न्यऽबुॅरुॅ छो'ट बो'ड विशाल रूप
सूक्ष्म स्थूलॅ साकार निराकार
बासुॅवुन तुॅ खटवुन डे'शुॅवुन न अथियिवुन
सत असत प्रकाश विमर्श छि चाऽनी स्वरूप
कामकला ज्ञानुँ किन्य ई रूप ध्यान कऽरिथ
बऽखुॅत्य त्रिभवनंन मंज़ यिमय रूप वुछान।।

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः
पयोधौ कल्लोलप्रतिहत महिम्नीव पृषतः।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विककुलै
र्भजन्ते तत्त्वौधाः प्रशममनुकल्पं परवशाः।।३२।।

ही सकल जननी लयाकार शखती
तत्त्व क्रियायि तत्त्व छि पानुॅसऽय लय गछ़ान
सिरिय जुॅचुॅ सिरियस अग्न त्यम्बरि अऽगुॅनस
पाँ छिकुॅ छि मलखन यिथुॅ लय गछ़ान

तिथय पाऽठ्य शे'यत्रहन तत्वन व्वपद्योमुत
सोरुय छु प्रलयुँ समयि चे'य लय गछ़ान ।।

विधिर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः ।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां
विकल्पैरेभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम् ।।३३।।

ब्यो'न ब्यो'न मतुँ वाऽल्य संत तुँ विद्वान छिय
पनुँनि अनमानुँ यिम यिम चे' नाव दिवान
शीतल-चन्द्र विष्णू ब्रह्मा तुँ प्रकृती
ज़ीव ज़ीवात्मा सिरिय तय स्वभाव
महावीर मुन्नी बुद्ध तुँ आकाश वायू
शिव तुँ शक्ती स्वभावनायि किन्य वनान ।।

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया दैशिकदृशा
षडध्वध्वान्तौधच्छिदुर गणनातीतकरुणाम् ।
परानन्दाकारां सपदि शिवयन्तीमपि तनुं
स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम् ।।३४।।

चानीय दयायि बे'यि ग्वरुँ अनुग्रह किन्य
साधक छु सुशमनायि मंज़ प्रवेश करान
अदुँ शनवय अन्धुँकारुँक्य गण्ड चऽटिथ
सु भाग्यवान छु परमानन्द स्वरूप लबान
ही दयासागरी मूह तुँ अज्ञानुँ रो'स
सुय अनन्त काल ताम शिवमय बनान ।।

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे।।३५।।

ग्वरुँ रूप शिव चुँय ज्ञानुँ रूप चुँ शक्ती
अद्वैत चुँय द्वयुत ति चुँय तुँ आत्मा स्वरूप
ग्वरुँ दीक्षा चुँ ग्वणसमूह चुँ अष्टसिद्धी
खऽटिथ अविद्या तुँ ज़ानवुँन्य विद्या ति चुँय
चुँय सोरुय चे'य मंज़ सोरुय छुय
चे' रो'स के'न्ह नुँ अऽस्य छि माऽज यी ज़ानान।।

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्मविलयात्
गते जन्मन्यन्तं गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत्पूजास्तुतिविरचनेनैव दिवसान्।।३६।।

बे शुमार जन्मन फ्युर दिथ माता
कर्मफल भूगान लो'बुम मनुष्य ज़न्म
अनुग्रे'ह शिवुँ रूपुँ ग्वरु दीव प्राऽविथ
ज़ोनुम शिव रुपुँ चोन व्यस्तार
छम मे' अभिलाशा ये'मि ज़न्मुँक्य दो'ह
गऽछ़ि लगुँन्य चे' पूज़ा त्वता करुँनस।।

यत्षट्पत्रं कमलमुदितं तस्य या कर्णिकाख्या-
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि।।३७।।

शन वऽथरन हुन्द फो'लॅमुत पम्पोश
षठकोण मुद्रा शिव तुॅ शक्ती
अऽथ्य मंज़ बिन्दुॅ ओंकार पीठ चे' आसन
कुण्डलिनी रुपुॅ अमृतवाहिनी
ज्ञानुॅ क्रयायि सो'स चे' शामुॅ रंग दोरुमुत
ज़गतन रछान छख सकल जननी
अऽथ्य स्वरूपस ज़गतमाता बुॅ विज़ि विज़ि
भावनायि स्यदुॅपीठस नमन करान।।

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशांके
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि! सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम्।।३८।।

ही सकलजननी स्वतंत्र रूप चुॅ आऽस्यथुॅय
को'रुथ अनुग्रह आऽठव स्वरूपव
पृथ्वी ज़ल अग्न वायू तुॅ आकाश
सिरिय् चन्द्रमुॅ आत्मा, को'रुथ व्यकास
ज्ञानुॅ-क्रिया शक्ती चुॅ वछुॅ बारुॅ नऽमिथुॅय
तोति पंचकृति व्यवुॅहार चलावान
छम मे आशा रटुॅ हऽम दामनस तल
प्रावुॅ स्वख बुॅ चानिय परम धामुक।।

- - ० - -

इति श्री पञ्चस्तव्यां सकलजननीस्तवः पञ्चमः समाप्तः
तथा काशमीरी भाषा पद्यानुवाद

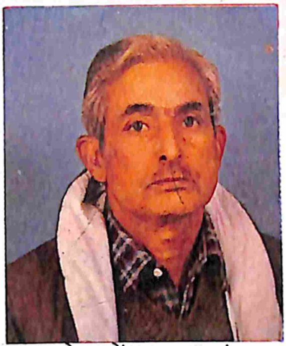

प्रो० ओंकारनाथ च्रंगू

ग्वरॅ आराधना

ग्वरॅ दीवुँ रोज़ुम सहायतस
मन म्योन अनतन सऽ कोबुँहस
रज़ुँ कर अऽमिस व्वटुँ वांदरस
मन म्योन अनतन सऽ कोबुँहस

क्रालन गरयोनस रॅचि़ मे'चे़
ग्रटुँ कर्मने रो'टनस कचे़
श्वंगरफ मे' रंग खार मंज़ मनस
मन म्योन अनतन सऽ कोबुँहस

आसान छु कीमियागर ग्वरॅय
पात्र ति गछ़ि नेरुन शशिय
युथ हा वरि सु पानय पानु तस
मन म्योन अनतन सऽ कोबुँहस

ग्वरॅ सुॅन्ज़ क्रपा यस रछ़ बने
आऽडुक नुँ नेरि मंज़ मनकले'
रंगुँ रंगुँ मे' करतन रंगुँ रो'स
मन म्येन अनतन सऽ कोबुँहस

मतुँ त्रावतम व्वन्य अडुँवते
युथ नुँ फेरॅ ये'ति बे'यि वति वते
टिकिलिस गंडुम पनुँनिस बरस
मन म्योन अनतन सऽ कोबुँहस।

✶